काम के प्रति बाइबल का रवैया



आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2026

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं।

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org
बाइबल-विश्वासियों की व्याख्या: believersbiblecommentary.com

(Hindi–Biblical Attitude Towards Work)

काम के प्रति बाइबल का रवैया

विषयसूची

1. काम परमेश्वर का विचार है 1
2. काम के प्रति गलत दृष्टिकोण 3
3. काम के प्रति विश्वासी का दृष्टिकोण 6
4. विश्वासियों को काम करने की आज्ञा दी गई है 11
5. सात सही मनोवृत्तियाँ 20
6. आपके काम के संबंध में प्रतिज्ञाएं 25
7. नई दुनिया में काम 28

1
काम परमेश्वर का विचार है

उत्पत्ति 1:31
तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवाँ दिन हो गया।

उत्पत्ति 2:1-3
[1]यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया।
[2]और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया, और उसने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया।
[3]और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उसमें उसने सृष्टि की रचना के अपने सारे काम से विश्राम लिया

यहां पर हम परमेश्वर को काम करते हुए देखते हैं। उसने छः दिन काम किया और सातवें दिन विश्राम किया। परंतु जिस प्रकार हम थकान की वजह से विश्राम करते हैं, उस तरह उसने थकान की वजह से विश्राम नहीं किया। उसे जो करना था, उसने पूरा किया—सृष्टि की उत्पत्ति का काम पूरा किया। उसने देखा कि जो कुछ उसने किया था वह अच्छा और परिपूर्ण था। अतः उसने कुछ समय विश्राम किया।

परंतु जिस क्षण आदम ने पाप किया, उस क्षण परमेश्वर ने फिर काम करना आरंभ किया। परंतु इस समय यह छुटकारे का काम था—मानव को वापस स्वयं की ओर लाना। उस समय से परमेश्वर निरंतर काम में लगा हुआ है, वह मानवजाति के लिए परमेश्वर के छुटकारे की योजना को प्रगट कर रहा है। परमेश्वर कार्य करता है!

उत्पत्ति 2:15
तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि

वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे।

परमेश्वर ने आदम को अदन की वाटिका में रखकर उसे यह नहीं कहा, "आदम, तुम्हें केवल मेरी आराधना करना है" पतन से पहले ही परमेश्वर ने आदम को एक काम सौंपा था। आदम का काम था *"भूमि जोतना"* (उत्पत्ति 2:15) और वाटिका की देखरेख करना।

यह उसका काम था! पतन से पहले ही परमेश्वर ने काम की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

पाप में गिरने के बाद, आदम को भूमि जोतने का काम जारी रखना पड़ा, फर्क केवल इतना था कि अब भूमि श्रापित हो गई थी और अब आदम को फसल पाने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना था (उत्पत्ति 3:17-19)। हम सब यह मानते हैं कि विवाह परमेश्वर का विचार है—इसलिए हम विवाह का आनंद उठाते हैं। हम जानते हैं कि कलीसिया परमेश्वर का विचार है—इसलिए हम कलीसिया के द्वारा आनंद मनाते हैं। सुसमाचार यह है कि काम भी परमेश्वर का विचार है। परमेश्वर ने कार्य की संस्थापना की! अतः आइए, काम का आनंद लें!

2
काम के प्रति गलत दृष्टिकोण

काम एक बाधा

हम में से कई लोग परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अत्यंत उत्साहित होते हैं। परंतु हम सब के पास एक "काम" या नौकरी है जिस पर हमें सप्ताह में पाँच या छह दिन जाना पड़ता है। कभी कभी हम सोच सकते हैं, "काश, मुझे इस काम से छुटकारा मिले, तो मैं यीशु की सेवा के लिए स्वतंत्र"। हमारा "काम" या "नौकरी" हमें अपनी स्वर्गीय बुलाहट को पूरा करने के मार्ग में एक बड़ी रुकावट लगती है। यह अत्यंत गलत दृष्टिकोण है। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि जब तक हम इस पृथ्वी पर हैं, हमें काम करने की जरूरत है—यहाँ तक कि हम में से जो पूर्णकालिक सेवकाई में हैं, उन्हें भी।

जब मैं करीब बारह वर्ष का था, तब मैंने "उद्धार" पाया। उस समय मैं बैंगलोर के बिशप कॉटन बॉयज स्कूल में पढ़ता था। मैं यीशु के लिए अत्यंत उत्साही था, और अवसर मिलते ही उसके विषय में प्रचार करता था। कभी कभी मैं प्रचार करने के अवसर स्वयं उत्पन्न किया करता था। मुझे याद है कि मैं अपनी कक्षा में खड़ा हो गया और मैंने अपनी पूरी कक्षा को यीशु के विषय में बताया। मैं पड़ोस के दो स्कूलों में भी जाने लगा—बालडविन बॉयूज हाई स्कूल और कैथेड्रल स्कूल और यीशु के विषय में प्रचार करने लगा। परंतु स्कूल जाना मुझे मेरी इस "उभरती" सेवकाई के मार्ग में एक बड़ी रुकावट प्रतीत होने लगा, और जिसे "अध्ययन" कहते हैं, वह बात आशीष के बजाय बाधा लगने लगी। ऐसा लगता था कि मेरे हृदय के अंदर एक गुप्त प्रार्थना है—"हे परमेश्वर, मुझे इससे छुड़ा। प्रभु, यदि आप मुझे

पाठशाला जाने से और अध्ययन से छुटकारा देंगे, तो मैं आपके राज्य के लिए ज़्यादा काम कर सकूंगा और लोगों को यीशु के बारे में अधिक बता पाऊंगा"। परमेश्वर की स्तुति हो कि कि उसने मुझे उससे नहीं छुड़ाया ! मैंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की और इंजीनियरींग कॉलेज में गया, और उसके उपरान्त जैसे जैसे समय बीतता गया, मैं समझने लगा कि मुझे अध्ययन करना क्यों जरूरी है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने मुझे अध्ययन बंद करने के लिए नहीं कहा। परंतु मैं यह स्वीकार करूंगा कि एक समय ऐसा था जब अध्ययन करना और पाठशाला जाना परमेश्वर के उद्देश्यों की ओर बढ़ने में बड़ी रुकावट प्रतीत होते थे। उन किताबों को पढ़ना, अपना गृहकार्य करना और उन परीक्षाओं में बैठना मुझे बाइबल पढ़ने, प्रार्थना करने, गवाही देने और प्रचार करने की तुलना में अत्यंत महत्वहीन प्रतीत होता था। बाद में मैंने जाना कि काम के प्रति यह गलत दृष्टिकोण है।

काम एक बंधन

कुछ लोग काम को बंधन मानते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि वे बंधन में पड़े मजदूर या काम करने वाले गुलाम हैं। वे निरंतर सोचते हैं, "मुझे पसंद हो या न हो, मुझे सुबह उठना होगा और काम पर जाना होगा।" काम के स्थान पर कुछ नियम होते हैं, जो समस्या को और अधिक बढ़ाते हैं। हम जहाँ काम करते हैं, उसके अनुसार हमें वहां सुबह 9 बजे पहुंचकर सन्ध्या 6 या 7 बजे तक काम करना पड़ता है। काम के स्थान पर, हमें केवल कुछ ही निश्चित कामों को करने की अनुमति होती है, और अन्य काम करने की अनुमति नहीं होती। इस वजह से, कुछ लोग काम को बंधन समझते हैं। हम में से कुछ लोग नियमों और अधिकार रखने वालों के विरोध में विद्रोह करते हैं।

हमें यह समझने की जरूरत है कि काम के स्थान पर नियम बंधन नहीं हैं, बल्कि वास्तव में वे अनुशासन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। हमें बंधन और अनुशासन के मध्य अंतर को समझना है। हमारे

पास मसीह में आजादी और स्वतंत्रता है (गलातियों 2:4; गलातियों 5:1; 2 कुरिन्थियों 3:17) परंतु हमें यह भी समझना है कि मसीह में हमारे पास जो स्वतंत्रता है, उसके लिए सीमाएँ भी हैं (गलातियों 5:13)। इसलिए हम चाहे जो चाहें, वह नहीं कर सकते। इसलिए काम को बंधन के रूप में नहीं देखना चाहिए, बल्कि स्वयं को अनुशासित करने के अवसर के रूप में देखना चाहिए।

काम एक आवश्यक बुराई

कुछ लोग काम को एक आवश्यक बुराई मानते हैं-सिर्फ ऐसा काम जिसे इसलिए करना पड़ता है ताकि हमारे बिलों का भुगतान किया जा सके। अर्थात हमें काम करना है ताकि हम खा सकें और हमारे परिवारों का प्रयोजन कर सकें। परंतु कई लोग अपने काम से आनंदित नहीं होते और शिकायत करते और कुड़कुड़ाते हैं। विश्वासी होने के नाते, हमें अपने काम का आनंद लेना सीखना चाहिए और उसे एक आवश्यक बुराई मानना बंद करना है।

काम आराधना है

कुछ लोग इस गलत धारणा के साथ काम, काम और काम करते रहते हैं कि काम ही पूजा है। इस प्रवृत्ति ने हमारी कार्य संस्कृति पर प्रभुत्व करना आरंभ किया है। काम पूजा नहीं है क्योंकि आराधना या उपासना परमेश्वर के साथ संगति है। आप परमेश्वर के विषय में सोचे बगैर ही काम पूरा कर सकते हैं।

3
काम के प्रति विश्वासी का दृष्टिकोण

विश्वासी होने के नाते, काम के प्रति हमारा क्या दृष्टिकोण होना चाहिए? परमेश्वर ने जो काम, व्यवसाय और करियर दिया है, उसके प्रति हम किस दृष्टि से देखें? यहां तीन दृष्टिकोण दिए हैं जिन्हें मैं हर विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण मानता हूँ।

काम एक जरिया है

हमारा काम, नौकरी या रोजगार इस पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने का साधन है। यह वह माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर के उद्देश्य इस पृथ्वी पर पूरा किए जाते हैं। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति के जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य को पूरा करने के लिए काम परमेश्वर द्वारा दिया गया साधन है। मैं इस बात को समझता हूँ कि कुछ लोगों को पूर्णकालीन सेवा के लिए बुलाया गया है। परंतु पूर्णकालीन सेवकाई भी एक अर्थ में "काम" है।

काम एक रणनीति है

हमें समझना है और अपने काम को इस दृष्टि से देखना शुरू करना चाहिए कि वह परमेश्वर की रणनीति का एक हिस्सा है ताकि हमें उसकी इच्छा और उद्देश्य को पूरा करने में सक्षम बनाए। उदाहरण के तौर पर, विश्वासी होने के नाते, आपके मन में लोगों को प्रभु के लिए जीतने का बोझ हो। आपकी नौकरी और आपका पेशेवर करियर आपको लोगों के संपर्क में लाएगा, जिनसे आप अन्यथा शायद कभी नहीं मिल पाते। आपको अब अपने काम को एक दैवीय रणनीति के रूप में देखना है। परमेश्वर आपके पेशे का उपयोग एक रणनीतिक

साधन के रूप में करके आपको उन लोगों से जोड़ रहा है जिनके साथ वह चाहता है कि आप मसीह के बारे में साझा करें। आपकी नौकरी आपका "पल्पिट" है और जिन लोगों से आप संपर्क करते हैं, वे आपका "पैरिश" है।

काम तैयारी की एक प्रक्रिया है

काम मात्र वह स्थान नहीं है जहाँ हम पैसा कमाते हैं, बल्कि वह स्थान भी है जहाँ परमेश्वर हमारे चरित्र का निर्माण करता है। वह हमारी तैयारी की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। हम अक्सर सोचते हैं कि चरित्र मात्र संडे स्कूल, कलीसिया या बाइबल स्कूल में बनता है, परंतु परमेश्वर किसी भी स्थान पर हमारा चरित्र बना सकता है। वह हमारे जीवनों में प्रति दिन 24 घण्टे काम करता है।

हमारे कार्यस्थलों पर, परमेश्वर हमें सिखा सकता है कि लोगों के साथ कैसे व्यवहार करें, विभिन्न परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया कैसे व्यक्त करें, ईश्वरीय बुद्धि पर कैसे निर्भर रहें और कैसे समस्याओं का समाधान करें। हममें से कुछ लोग अपने कार्यस्थल पर ऐसे लोगों को पा सकते हैं जो हमारे लिए शरीर में काँटे के समान हैं—ऐसे लोग जिनके साथ हम संबंध नहीं बना पाते। परंतु परमेश्वर हमारे कार्यस्थल पर ही हमारे चरित्र का निर्माण कर सकते हैं। इसके अलावा, हमारे कार्यस्थल पर, हमें नए कौशल सीखने के और हमारी योग्यताओं का विकास करने के अवसर मिल सकते हैं, जिनका उपयोग परमेश्वर अपने राज्य के विस्तार के लिए कर सकता है। उदाहरण के तौर पर, आप अपने कार्यस्थल पर नेतृत्व के कौशल सीख सकते हैं और परमेश्वर उन कौशलों का उपयोग आपकी स्थानीय कलीसिया में किसी सेवकाई मे करे और इस प्रकार वहाँ आपको आशीष का कारण बना सकता है।

हम बाइबल के कुछ व्यक्तियों पर विचार करें ।

यूसुफ

भविष्यवाणी से संबंधित स्वप्न और योजना की पूर्ति

यूसुफ के बारे में सोचिए। यूसुफ के पास परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन और स्वप्न था, लेकिन "पूर्णकालिक सेवकाई" में जाने का निर्णय लेने के बाद भी उसने अपना सब कुछ नहीं छोड़ा। यूसुफ परमेश्वर की तैयारी की प्रक्रिया से होकर गुज़रा। इस प्रक्रिया में उसे पोतिफर के घर में काम करने के लिए विवश होना पड़ा और जो काम उसे वहां पर सौंपा गया, उसे करना पड़ा। वहां से उसे बिना किसी अपराध के कैद में डाल दिया गया और कैदखाने में भी उसे काम करना पड़ा। उसे बाकी सारे कैदियों की देखरेख करने के लिए नियुक्त किया गया। उसके बाद उसे मिस्र का प्रधान मंत्री बनाया गया और यहां पर भी उसे काम करना पड़ा। उसे पूर्णकालीन सेवकाई के लिए नहीं बुलाया गया था, फिर भी परमेश्वर ने उसे अपने ईश्वरीय उद्देश्य को पूरा करने हेतु उचित स्थान पर रखा और पद पर स्थापित किया। यूसुफ ने मिस्र देश के प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया और परमेश्वर ने उसके इस पद और कार्य का उपयोग उस स्वप्न को पूरा करने के साधन के रूप में किया जो उसने यूसुफ को एक बालक के रूप में दिया था। यदि यूसुफ प्रधान मंत्री के रूप में अपना काम त्याग देता और जंगल में कहीं किसी मठ में जाकर बैठ जाता, तो क्या होता? शायद वह परमेश्वर द्वारा दिए गए स्वप्न की पूर्ति को कभी नहीं देख पाता!

इस सच्चाई पर विचार करें। यूसुफ से कई वर्ष पहले, परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बात की और कहा कि वह उसकी संतान को किसी पराए देश में ले जाएगा। फिर उसने अब्राहम से कहा, *"तब यहोवा ने अब्राम से कहा, "यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, और उस देश के लोगों के दास हो जाएँगे; और वे उनको चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे। फिर जिस देश के वे दास होंगे उसको*

मैं दण्ड दूँगा: और उसके पश्चात् वे बड़ा धन वहाँ से लेकर निकल आएँगे।" (उत्पत्ति 15:13,14) परमेश्वर ने यूसुफ को उसके द्वारा दिए गए कौशल और "पेशेवर" करियर का उपयोग उसे उचित स्थान पर स्थापित करने के साधन के रूप में किया ताकि वह इस भविष्यवाणी से संबंधित योजना को पूरा कर सके।

हममें से कई लोग समाजों, शहरों और राष्ट्रों के लिए परमेश्वर की भविष्यवाणी से संबंधित योजनाओं से अनजान हैं। उसके पास (*'Kairos'*) *'कैरोस'* क्षण (यूनानी भाषा के *कैरोस* का उपयोग विशेष घटनाओं, उपयुक्त क्षणों, महत्वपूर्ण घटनाओं और समय में बदलावों के लिए होता है) और ईश्वरीय प्रवेश-बिंदु हैं (अवसर के द्वार), जहाँ समाजों, शहरों और राष्ट्रों के लिए अवसरों के द्वार खुल सकते हैं। परमेश्वर "यूसुफ" की खोज में है, जिन्हें वह उनके कौशलों और व्यावसायिक योग्यताओं का उपयोग करते हुए समाजों, शहरों और राष्ट्रों के लिए अपनी भविष्यवाणी से संबंधित योजनाओं को पूरा करने हेतु उचित स्थान पर स्थापित कर सके।

दाऊद, दानिय्येल और पौलुस

सांसारिक और आत्मिक का समन्वय

दाऊद भजन का लेखक, भविष्यद्वक्ता और राजा था। दानिय्येल न केवल भविष्यद्वक्ता था, बल्कि प्रधान मंत्री भी था जो देश का प्रशासन चलाता था और राजा के कामकाज का ध्यान रखता था। पौलुस के विषय में विचार करें। हम उसे एक ऐसे महान प्रेरित के रूप में जानते हैं जिसने अधिकतर नए नियम का लेखन किया। हमारे पास पर्याप्त प्रमाण है जिससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि कम से कम तीन शहर—इफिसुस, कुरिन्थुस और थिस्सलुनीका–में उसने अपनी और अपनी सेवकाई टीम की जरूरतों को पूरा करने हेतु काम किया। वह अपने हाथों से काम करता था और उसने अपनी जरूरतों का खुद ही

ध्यान रखा, ताकि जिन लोगों के बीच वह सेवकाई कर रहा था, उन पर बोझ न बने।

दाऊद, दानिय्येल और पौलुस में हम "आत्मिक" और "सांसारिक" की सहक्रिया—अर्थात् दोनों के एक साथ कार्य करने—को देखते हैं। हमें ऐसे स्थान पर आना है जहाँ पर हम काम को एक सांसारिक कार्य के रूप में और परमेश्वर के साथ चलने को आत्मिक और काम से अलग के रूप में न देखें। अपने काम को परमेश्वर के साथ आपके जीवन का एक हिस्सा मानें। यह आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना का एक भाग है। दाऊद, दानिय्येल या पौलुस काम करते थे, इसलिए उन्होंने अपना अभिषेक नहीं खो दिया! आपका काम "आत्मिक" है केवल इसलिए क्योंकि परमेश्वर स्वयं काम करता है।

4
विश्वासियों को काम करने की आज्ञा दी गई है

नए नियम में, प्रभु यीशु ने विश्वासियों को महान आदेश दिया कि वे जाकर सारे संसार में सुसमाचार सुनाएं। नए नियम की कलीसिया ऐसा तरीका अपना सकती थी जिसमें उद्धार पाए प्रत्येक व्यक्ति से कहा जाता कि वह हर "सांसारिक" काम में अपनी भागीदारी त्याग दे और मात्र सुसमाचार सुनाए। परंतु यह देखना अत्यंत दिलचस्प है कि प्रेरित पौलुस ने विश्वासियों से क्या करने के लिए कहा है।

अपने हाथों से काम करें

इफिसियों 4:28
चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे, वरन् भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे, इसलिये कि जिसे प्रयोजन हो उसे देने को उसके पास कुछ हो।

जो चोरी करता था, अब उसे चोरी नहीं करनी चाहिए, परंतु अपने हाथों से काम करना है। उसे अपने हाथों से परिश्रम करना है, और जो सही तथा भला है वही करना है, ताकि उसके पास उसकी जरूरतों के लिए, और दूसरे जरूरतमंद लोगों को देने के लिए भी पर्याप्त हो। यहां पर पौलुस ने विश्वासियों को अपने हाथों से काम करने का मूल्य और महत्व सिखाया। उसने उन्हें वह काम भी करने का निर्देश दिया जो अच्छा है। इसका मतलब यह है कि विश्वासियों को ऐसे कामों में संलग्न नहीं होना चाहिए जो बेईमानी या भ्रष्टाचार से जुड़े हों।

ताकि तुम्हें किसी वस्तु की कमी न हो

1 थिस्सलुनीकियों 4:11,12

[11]और जैसी हम ने तुम्हें आज्ञा दी है, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना–अपना काम–काज करने और अपने अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो;
[12]ताकि बाहरवालों से आदर प्राप्त करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो।

पौलुस ने विश्वासियों से कहा कि वे अपने हाथों से परिश्रम करें ताकि उद्धार न पाए हुए लोगों को उन पर अनुचित आचरण के लिए दोष लगाने का कोई अवसर न मिले। यह भी देखें कि अपने हाथों से काम करने का संबंध किसी वस्तु की कमी न होने या हमारी सारी जरूरतों के पूरे होने से भी है। कुछ लोग अपनी सभी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए घर पर ही "परमेश्वर पर भरोसा" करते रहते हैं। यह सच है कि परमेश्वर ने हमसे प्रतिज्ञा की है कि वह *"अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा"* (फिलिपियों 4:19)। परंतु यह भी सच है कि परमेश्वर ने अपने वचन में हमें आज्ञा दी है कि हम काम करें, इससे यह संकेत मिलता है कि परमेश्वर हमारे काम को एक माध्यम के रूप में उपयोग करेगा जिससे वह हमारी जरूरतों को पूरा करे। हमारे काम के माध्यम से परमेश्वर का हमारी जरूरतों का पूरा करना उतना ही अलौकिक है जितना कि एक कौए का पैसों का पुलिन्दा ले आना! यह उतना अभुतपूर्व नहीं होगा, परंतु निश्चय ही अलौकिक है, क्योंकि वही परमेश्वर हमारी जरूरतें पूरा करता है। याद रखें कि नौकरी पाने, उसे बनाए रखने और अपने संपूर्ण पेशेवर करियर के दौरान वेतन और वेतन वृद्धि पाने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह और ईश्वरीय प्रबंध की जरूरत है।

कुछ लोग इस इंतजार में हैं कि परमेश्वर "अलौकिक" तरीके से उनकी जरूरतों को पूरा करे, जैसे लोग आकर उनके हाथों में पैसा रख कर जाएं या डाक द्वारा उन्हें चेक मिले। जब वे ऐसा होते हुए नहीं

देखते, तब वे सोचते हैं कि परमेश्वर उनकी जरूरतों को पूरा क्यों नहीं कर रहा है। परंतु परमेश्वर ऐसे लोगों का इंतजार करता है कि वे उस माध्यम से जुड़ें जिसके द्वारा परमेश्वर उनकी जरूरतों को पूरा करेगा। कुछ मामलों में, परमेश्वर उनके नौकरी करने और कुछ समय तक उस नौकरी में बने रहें। वह नौकरी उनके जीवन के लिए परमेश्वर का प्रबंध करने का माध्यम है।

यदि आप काम नहीं करते, तो खाए ना!

2 थिस्सलुनीकियों 3:7-12

7क्योंकि तुम आप जानते हो कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए, क्योंकि हम तुम्हारे बीच में अनुचित चाल न चले,
8और किसी की रोटी मुफ़्त में न खाई; पर परिश्रम और कष्ट से रात दिन काम धन्धा करते थे कि तुम में से किसी पर भार न हो।
9यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं, पर इसलिये कि अपने आप को तुम्हारे लिये आदर्श ठहराएँ कि तुम हमारी सी चाल चलो।
10क्योंकि जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए।
11हम सुनते हैं कि कुछ लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं, और कुछ काम नहीं करते पर दूसरों के काम में हाथ डाला करते हैं।
12ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें।

नया नियम हमें आज्ञा देता है कि हम अनुचित चाल चलने के बजाय, बिना किसी काम को किए दूसरों के भरोसे जीविका चलाने के बजाय, शांति के साथ अपना काम करें और अपनी रोटी खाएं। काम विश्वासियों के लिए नए नियम की आज्ञा है।

अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करना

1 तीमुथियुस 5:8

पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।

मैं उन लोगों को चुनौती देता हूँ जिन्हें पूर्णकालीन सेवा के लिए बुलाया गया है। सेवकों, आपको कुछ बातें ध्यान में रखना हैं; परमेश्वर ने अपने वचन में आपको कुछ जिम्मेदारियां दी हैं जिन्हें आपको पूरा करना है। इनमें से एक है अपने घराने की जरूरतों को पूरा करना। कई स्त्री और पुरुष जल्दबाजी में अपनी नौकरी त्याग देते हैं और विश्वास से जीवन बिताने का दावा करने लगते हैं। विश्वास से जीने का मतलब नौकरी त्यागना नहीं है। नौकरी में बने रहने के लिए भी विश्वास की आवश्यकता होती है। कभी कभी लोग अपनी नौकरियां त्याग देते हैं, सेवकाई में जाते हैं और फिर अपने परिवार के सदस्यों को भोजन खिलाने के लिए संघर्ष करते हैं। मैं कुछ मुश्किल समयों के विषय में नहीं बोल रहा हूँ, क्योंकि हममें से सभी को ऐसे समयों से होकर गुजरना पड़ता है। लेकिन यदि आपके परिवार की मूलभूत जरूरतें दिन-प्रतिदिन और महीने-दर-महीने पूरी नहीं हो रही हैं, क्योंकि आप पूर्णकालीन सेवा में हैं, तो आपको तब तक नौकरी करने के विषय में सोचना होगा, जब तक कि आपकी सेवकाई आपकी जरूरतें पूरी कर पाने की स्थिति में नहीं होती। अतः पूर्णकालीन सेवकाई की ओर अपना कदम बढ़ाने से पहले, यह बात निश्चित कर लें कि आप अपनी और अपने परिवार की आर्थिक जरूरतों का ध्यान रख पाएं। यदि आप अपनी पत्नी और बच्चों की देखभाल करने के लिए तैयार नहीं हैं, तो विवाह न करें। परमेश्वर की इच्छा है कि आप अपने घराने के लिए जिम्मेदार रहें।

मेरी गवाही

बैंगलोर में मेरी प्रारंभिक शिक्षा के दिनों में, सेवकाई के लिए मुझे बहुत जोश था। मैंने प्रार्थाा की कि मैं अपनी दसवीं कक्षा पूरी होते ही पूर्णकालीन सेवा में जा पाऊं। ऐसा करने के बाद, मैंने अपने माता-पिता को बहुत मुश्किल में डाल दिया और इस बात पर जोर देता रहा कि मैं अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी नहीं करना चाहता, और बाइबल सेमिनरी

जाना चाहता था। इसलिए मैंने भारत के बाइबल कॉलेजों की जानकारी ली और पुणे के बाइबल कॉलेज को पत्र भेजा। उन्होंने यह कह कर उत्तर दिया कि मेरी उम्र कम है और बाइबल कॉलेज में दाखिला पाने की न्यूनतम योग्यता बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण करना थी। मैं वह पत्र पाकर निराश हो गया। मुझे केवल दो वर्ष और अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी करनी थी, अतः आवश्यक शिक्षा पूरी करने के बाद मैंने सेमिनरी में दाखिल होने का फैसला लिया।

लेकिन अगले दो वर्षों में मेरे साथ कुछ हुआ। मैं बैंगलोर में एक कलीसिया में जाता था और वहाँ मैंने एक बात पर ध्यान दिया। मैंने दो तरह के लोग देखे-एक समूह जो सेवा करता था और कलीसिया में विभिन्न तरह से अपनी सेवा प्रदान करता था, और दूसरे वर्ग के लोग बहुत बड़ी संख्या में थे, लेकिन कुछ नहीं करते थे। दूसरे वर्ग में अधिकतर विद्यार्थी और पेशेवर थे जो अपनी नौकरी में अत्यधिक व्यस्त होने के कारण किसी भी प्रकार की सेवकाई में शामिल होने से स्वयं को अलग रखते थे। मैं सोचने लगा कि अधिकतर "गैर-पादरी" विश्वासी सेवकाई में क्यों शामिल नहीं होते। इसी समय के दौरान मेरे हृदय में एक दृढ़ संकल्प उत्पन्न हुआ। मैंने संकल्प किया कि मैं अपने जीवन के द्वारा लोगों को यह दिखा दूंगा कि व्यक्ति एक करियर और नौकरी करते हुए और "सामान्य जीवन" बिताकर भी परमेश्वर की सेवा कर सकता है। अतः जब तक मैं अपना बारहवीं कक्षा की पढ़ाई समाप्त करता, सेमिनरी जाने की मेरी इच्छा खत्म हो गई थी और इसके बजाय, मेरे जीवन में मुझे क्या करना है, इसे लेकर मेरे भीतर उद्देश्य की एक नई भावना उत्पन्न हो गई थी।

इस दौरान, परमेश्वर ने मेरे हृदय में बैंगलोर शहर में एक मजबूत कलीसिया स्थापित करने, वहाँ से पूरे भारत देश तक पहुँचने और विश्व के राष्ट्रों को प्रभावित करने की इच्छा उत्पन्न की। इसलिए मैंने स्कूल में बारहवीं कक्षा की पढ़ाई पूरा किया और उसके बाद मेरे माता-पिता

ने मुझे इंजीनियरिंग पढ़ने के लिए मनिपाल भेजा। तब तक मैंने अपनी पढ़ाई को बोझ के रूप में देखना बंद कर दिया था और समझने लगा था कि मेरी शिक्षा एक ईश्वरीय रणनीति का हिस्सा है। मेरी शिक्षा की वजह से मैं ऐसी जगह पर था जहाँ मैं परमेश्वर के राज्य के लिए बहुत से और लोगों तक पहुँच सकता था।

मनिपाल में विश्वविद्यालय परिसर में, मैंने पूरे भारत और विश्व के अन्य भागों से आए हुए सैकड़ों विद्यार्थियों को देखा। मुझे विश्वास था कि वहाँ मेरे अध्ययन करने के पीछे एक आत्मिक उद्देश्य था।

मेरे हृदय में वहीं पर परमेश्वर की सेवा करने की और आत्माओं को जीतने की इच्छा थी। जनवरी 1989 में, इंजीनियरींग के मेरे तीसरे वर्ष के दौरान, प्रभु ने मेरी अगुवाई की कि मैं वहाँ एक विद्यार्थी संगति की स्थापना करूं जो बाद में एक स्थानीय कलीसिया के रूप में विकसित हुई और आज भी चल रही है। अब मुझे मेरी शिक्षा एक बोझ, आवश्यक बुराई या बंधन नहीं लगती थी। मैंने उसे भविष्य की सेवकाई के लिए एक साधन, एक ईश्वरीय रणनीति और तैयारी की प्रक्रिया के रूप में समझा। इंजीनियरींग में अपनी स्नातक डिग्री प्राप्त करने के बाद, मैंने अपना अध्ययन जारी रखने का फैसला किया। मेरे माता-पिता ने मुझे उच्च शिक्षा के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका जाने में सहायता की। ओहियो के क्लीव्हलैण्ड विश्व विद्यालय का इंजीनियरींग विभाग जहाँ मैंने दाखिला लिया था, संयुक्त राज्य अमेरिका के तीन सर्वश्रेष्ठ विभागों में से एक था।परमेश्वर के अनुग्रह से मुझे दूसरे सत्र में दो-तिहाई आर्थिक सहायता प्राप्त हुई और तीसरे सेमेस्टर से पूरी आर्थिक सहायता मिली।

विश्व विद्यालय में अध्ययन और शोध करते समय मैंने एक छोटी-सी अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी संगति आरंभ की, इसमें भारत, इंडोनेशिया और मलेशिया से विद्यार्थी थे। उसके बाद मैं न्यू जर्सी

गया और कोरियन क्रिश्चियन फेलोशिप के साथ जुड़ गया जिसमें दो सौ मसीही छात्र थे। ये कोरियन छात्र कितनी गहनता और उत्साह के साथ प्रार्थना करते थे यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता था।

इस समय के दौरान, मैं नियमित रूप से विश्वविद्यालय परिसर में स्थित एक अफ्रिकी-अमेरिकी कलीसिया में सेवा करने लगा। एक साल से अधिक समय तक मैंने इस अफ्रिकी-अमेरिकी कलीसिया में हर बुधवार रात शिक्षा दी, और उनकी रविवार की सभाओं में, और समय समय पर तम्बुओं की सभाओं में भी प्रचार किया।

विवाह के बाद भारत से एमी भी मेरे साथ आ गई और मैंने विश्वविद्यालय छोड़ा और सॉफ्टवेयर पेशेवर के रूप में काम करना शुरू किया। इस समय के दौरान, अँमी और मैं दूसरे युवा हिस्पैनिक दम्पत्ति के साथ काम करने लगे और हमने न्यू ब्रन्सविक, न्यू जर्सी में हिस्पैनिक कलीसिया की स्थापना की। यह बहुत समृद्ध अनुभव था, क्योंकि हमें विभिन्न पृष्ठभूमियों और संस्कृतियों के लोगों के साथ मिलकर काम करने का अवसर मिला। भविष्य की सेवा के लिए यह एक उत्कृष्ट प्रशिक्षण का अवसर था, जो इसलिए संभव हुआ क्योंकि मैं उच्च शिक्षा के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका गया।

सन 1998 में हम न्यू जर्सी से शिकागों आए। 1999 में भारत में सेवा यात्रा के दौरान, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि अब हमारे भारत लौटने का और हमारे हृदय के दर्शन को पूरा करने का समय आ गया है। इसलिए हमने जनवरी 2001 को बैंगलोर लौटने के लिए निर्धारित किया। जब हम शिकागो से बैंगलोर लौटने की तैयारी करने लगे, तब हमारी मुख्य चिंता भारत में अपनी सेवकाई आरंभ करने हेतु साधन जुटाना था। शिकागो में हम एक बहुत ही छोटी सी कलीसिया का हिस्सा थे। वे हमें वह बड़ी धनराशि नहीं दे सकते थे जिसकी हमारे बड़े दर्शन को पूरा करने के लिए आवश्यकता थी। जब हम प्रभु से प्रार्थना

करते रहे, तब मैंने हृदय में स्पष्ट रूप से महसूस किया कि परमेश्वर चाहता है कि भारत लौटने के बाद भी मैं सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में काम करता रहूँ। अपने पेशेवर करियर को छोड़ने के विषय में मुझे प्रभु की ओर से कोई निर्देश नहीं मिला। इन वर्षों में, विशेषकर अमेरिका में हमारे निवास के अंतिम समय में, मेरे मन में एक कंपनी आरंभ करने की गहरी इच्छा हुई जो मसीही सिद्धांतों के आधार पर व्यवसाय करे और परमेश्वर के राज्य के लिए धन उत्पन्न करे। काफी समय से मेरे मन में यह इच्छा बढ़ रही थी, लेकिन मैं नहीं जानता था कि यह कैसे और कब किया जाए।

अंत में, समय आ गया कि हम भारत आएं। दिसंबर 2000 में हमने राष्ट्रों को सुसमाचार पहुँचने के एक बड़े दर्शन के साथ यू एस ए छोड़ा, लेकिन हमें यह पता नहीं था कि सेवकाई को पूरा करने के लिए आवश्यक आर्थिक संसाधन कहाँ से आएंगे। संयुक्त राज्य अमेरिका में कुछ मित्र हमारी सेवकाई के साथ जुड़े हुए थे और हमारा सहयोग कर रहे थे, परंतु जो दान हमें मिल रहा है, वह हमारे बड़े दर्शन को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

जब हम बैंगलोर आए, परमेश्वर ने अपनी कृपा से हमें सक्षम किया कि हम जनवरी 2001 में सॉफ्टवेयर सेवा कम्पनी आरंभ कर सकें। फरवरी 2001 में, हमने एक छोटी सी कलीसिया शुरू की–मेरे पिता के घर के बैठक-कक्ष में। सॉफ्टवेयर कम्पनी का दसवांश कलीसिया को दिया जाता था और इन पैसों से हम बहुत कुछ कर सकते थे–हमने किराये पर हॉल लिया, आवश्यक उपकरण खरीदे, पुस्तकों की छपाई करवाई और उन्हें निःशुल्क वितरित किया, केबल टी.वी. पर प्रसारण किया और हमारी अन्य सेवकाइयों को आर्थिक सहायता दी। हमारा दृष्टिकोण बड़ा था और पैसों की कमी की वजह से हमारे हाथ बंधे हुए नहीं थे। सेवकाई को शुरू करने के लिए हमारे पास पर्याप्त और उससे अधिक संसाधन थे।

आज मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो देख सकता हूँ कि किस प्रकार परमेश्वर ने मेरी शिक्षा और पेशे का उपयोग कर मुझे सेवकाई के लिए तैयार किया। मेरी शिक्षा और पेशे के साथ प्रभु का कार्य करने के अवसर घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे। मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि काम परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य को पूरा करने का साधन और ईश्वरीय रणनीति का एक भाग है।

जब आप वही करते हैं जो परमेश्वर चाहता है कि आप करें, तब आपका काम बाधा या बंधन या आवश्यक बुराई नहीं होगी। यदि परमेश्वर आपको काम करने के लिए बुलाता है, तो काम को आवश्यक बुराई, बंधन या बाधा न समझें। बल्कि, इसे अपने जीवन के लिए परमेश्वर की ईश्वरीय रणनीति के एक भाग के रूप में देखें, जिसके द्वारा पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का विस्तार किया जा सकता है।

5
सात सही मनोवृत्तियाँ

इफिसियों 6:5-10
[5]हे दासो (कर्मचारी), जो लोग इस संसार में तुम्हारे स्वामी (नियोक्ता) हैं, अपने मन की सीधाई से डरते और काँपते हुए, जैसे मसीह की वैसे ही उनकी भी आज्ञा मानो।
[6]मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिये सेवा न करो, पर मसीह के दासों (कर्मचारी) के समान मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो,
[7]और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं परन्तु प्रभु की जानकर सच्चे हृदय से करो।
[8]क्योंकि तुम जानते हो कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही पाएगा।
[9]हे स्वामियो, तुम भी धमकियाँ देना छोड़कर उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो; क्योंकि तुम जानते हो कि उन का और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष नहीं करता।
[10]इसलिये प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।

कुलुस्सियों 3:22-25
[22]हे सेवको (कर्मचारी), जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी (नियोक्ता) हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिये नहीं, परन्तु मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से।
[23]जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो;
[24]क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी; तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो।
[25]क्योंकि जो बुरा करता है वह अपनी बुराई का फल पाएगा, वहाँ किसी का पक्षपात नहीं।

इन दोनों शास्त्र-वचनों में दी गई शिक्षा उल्लेखनीय रूप से समान है। आज हमारे समय में स्वामी और दास की व्यवस्था नहीं है। परंतु

हम "स्वामी" और "दास" को "नियोक्ता" "कर्मचारी" के रूप में समझ सकते हैं, और तब ये बातें हमारे समय के लिए प्रासंगिक हो जाती हैं।

काम के विषय में पौलुस सात मनोवृत्तियों को प्रस्तुत करता है

1) पौलुस हमें कर्मचारियों के रूप में अपने नियोक्ताओं के प्रति आज्ञाकारी रहने का निर्देश देता है। इसका मतलब है कि हम दिए गए निर्देशों का पालन करें और अपने कार्यस्थल के नियमों का पालन करें।

2) उसके बाद हमें अपने नियोक्ता के प्रति आदर और सम्मान रखना है (डरते और काँपते हुए (इफिसियों 6:5))। विद्रोही होने और यह सोचने के बजाय कि हम अपने अधिकारियों से अधिक जानते हैं, हमें उन लोगों का आदर और सम्मान करना है जो काम के स्थान पर हमारे अधिकारी हैं।

3) पौलुस प्रेरणा की शुद्धता के विषय में कहता है, *"मन की सीधाई"* (कुलुस्सियों 3:22) या "एकचित्तता" के साथ अपने काम में ईमानदार बने रहें। "सच्चाई" या "एकचित्तता" यूनानी शब्द से आया है, जिसका अर्थ है, "बिना किसी कपट या स्वार्थ के"। इसका अर्थ यह भी है कि "उदारता, भरपूरी, खुलेपन और सरलता के साथ।"

4) पौलुस कर्तव्यनिष्ठा के विषय में भी बात करता है—अर्थात् जब कोई हमें देख नहीं रहा हो, तब भी जवाबदेह बने रहना। वह कहता है, *"मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिए नहीं।"* (कुलुस्सियों 3:22) इसकी प्रेरणा यह सच्चाई है कि हम मसीह के कर्मचारी हैं। यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि जिस कंपनी या संस्था में हम काम करते हैं, उसके कर्मचारी होने से

पहले हम मसीह के कर्मचारी हैं। हमारे काम के स्थान पर, हम मसीह के कर्मचारी हैं। हम मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं, और अपने काम को वैसे ही करते हैं मानो, *"हम मनुष्यों के लिए नहीं, परंतु प्रभु के लिए करते हैं,"* (कुलुस्सियों 3:23) क्योंकि हम मसीह के लिए काम कर रहे हैं, जो हमारा मुख्य नियोक्ता है और हमें देख रहा है। वह देखता है कि हम समय पर काम पर जा रहे हैं या नहीं। वह हमारी समय की पाबंदी या काम के स्थान पर हमारी उपस्थिति या अनुपस्थिति देखता है। हमने काम से छुट्टी क्यों ली, इसका वास्तविक कारण भी वह जानते हैं, भले ही हमने बीमार होने की सूचना दी हो और वास्तव में उस दिन कोई दूसरा काम करने के लिए छुट्टी ली हो। हम काम के स्थान पर अपने समय का उपयोग कैसे करते हैं, वह देखता है। क्या हम वास्तव में काम कर रहे हैं या अपना समय बर्बाद कर रहे हैं? हम जिन भी "शॉर्टकट" का सहारा लेने की कोशिश करते हैं, उन्हें भी वह देखते हैं। वह देखता है कि क्या हम झूठे बयान दे रहे हैं, बेईमान रिपोर्ट बना रहे हैं या इस प्रकार के अन्य काम कर रहे हैं।

5) पौलुस हमारे काम के संबंध में कहता है, *"मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो"* (इफिसियों 6:6) *"जो कुछ तुम करते हो तन मन से करो... प्रभु के लिये "* (कुलुस्सियों 3:23)। जो काम हमें सौंपा गया है, उसे हम पूरे मन से करना चाहिए। अधूरे मन से प्रयास न करें; इसके बजाय, अपना सब कुछ उसमें लगा दें। अधूरे मन से काम न करें। परंतु अपना सर्वस्व लगा दें। अपना सर्वश्रेष्ठ उसमें लगा दें। अपना काम ऐसा करें मानो आप उसे यीशु के लिए कर रहे हों।

6) उसके बाद पौलुस हमें निर्देश देता है, *"सच्चे हृदय से करो"* (इफिसियों 6:7) अपने काम को प्रसन्नता से करें, न कि कुड़कुड़ाते और शिकायत करते हुए। मेसेज बाइबल इसे इस प्रकार लिखती है, *"अपने चेहरे पर मुस्कान रख कर काम करें और इस बात को*

ध्यान में रखें कि आदेश देने वाला चाहे जो हो, आप वास्तव में परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं " (इफिसियों 6:7, द मैसेज अंग्रेजी बाइबल)

7) अंत में पौलुस कहता है कि "अपने प्रतिफल के लिए हम प्रभु की ओर देखें"(कुलुस्सियों 3:24)। मसीह आपका नियोक्ता है, अतः जब आप अपना काम कर चुकेंगे, तब आप इस बात के प्रति आश्वस्त रह सकते हैं कि वह विश्वासयोग्य रहकर आपको प्रतिफल देगा। जब आप अपने प्रतिफल के लिए परमेश्वर की ओर देखते हैं, तब आप संसार के समान आचरण करना बंद कर देते हैं। संसार के लोग आगे बढ़ने के लिये दूसरों को "धक्का देते" हुए और हर तरह के हथकण्डे अपनाकर आगे बढ़ते हैं। परंतु विश्वासी होने के नाते, हमें शांत, निश्चित रहना है और अच्छे मन से अपना काम करना है स्वर्ग का परमेश्वर हमें प्रतिफल देगा। जब परमेश्वर कार्यस्थल पर हमें पदोन्नति देने का निर्णय करता है, तब कोई भी मनुष्य हमारे मार्ग में बाधा नहीं बन सकता। और इस बात को भी याद रखें, कि प्रतिफल का वह भाग आने वाले संसार में है। जब आप दूसरी ओर अपनी मीरास में प्रवेश करेंगे, तब आपको पूरा प्रतिफल मिलेगा।

शायद मेसेज बाइबल से लिये गए कुलुस्सियों 3:22-25 के वचन इसे और स्पष्ट करते हैं।

कुलुस्सियों 3:22-25

[22]हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिये नहीं, परन्तु मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से।

[23]जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो;

[24]क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी; तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो।

[25]क्योंकि जो बुरा करता है वह अपनी बुराई का फल पाएगा, वहाँ किसी का पक्षपात नहीं।

पूर्णकालीन सेवकों के लिए सलाह

एक समय, बैंगलोर में एक पासबान ने मुझसे पूछा कि मैं अपने दफ्तर में कितने घण्टे काम करता हूँ। मैंने उसे बताया कि मैं सप्ताह में सामान्यतः 40 से 50 घंटे काम करता हूँ। उन्हें आश्चर्य हुआ और उन्होंने स्वीकार किया कि पूर्णकालीन पास्टर के रूप में वे कभी-कभी दिन में चार घंटे भी काम नहीं करते थे। मेरा दृढ़ विश्वास है कि पूर्णकालीन सेवकों–पासबान, सुसमाचार प्रचारक और अन्य सेवकों को उसी कार्य-नीति और कार्य-अनुशासन का पालन करना चाहिए, जिसका पालन "सांसारिक" नौकरी करने वाले लोग करते हैं। आपको प्रतिदिन कम से कम आठ घंटे और सप्ताह में कम से कम 40 घंटे सेवकाई का कार्य करना चाहिए। काम की अच्छी आदतों को अपनाने के लिये आपको अनुशासित रहना है।

6
आपके काम के संबंध में प्रतिज्ञाएं

बाइबल में काम से संबंधित कई प्रतिज्ञाएं हैं। हमने पिछले अध्याय में देखा कि जो काम हम करते हैं, उसके लिए परमेश्वर हमें प्रतिफल देगा। हमारे प्रतिफल या पुरस्कार का एक भाग हमें तब मिलेगा जब हम प्रभु से स्वर्ग में मिलेंगे और हमारे प्रतिफल का एक भाग हमें इस वर्तमान समय में दिया जाता है यहां कुछ प्रतिज्ञाएं दी गई हैं जिनकी हम इस पृथ्वी पर रहते हुए अपेक्षा कर सकते हैं:

आपके हाथ के कामों पर आशीष

व्यवस्थाविवरण 28:8
तेरे खत्तों पर और जितने कामों में तू हाथ लगाएगा उन सभों पर यहोवा आशीष देगा; इसलिये जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें वह तुझे आशीष देगा।

व्यवस्थाविवरण 28:12
यहोवा तेरे लिये अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा; और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा।

पुरानी वाचा के अंतर्गत परमेश्वर के लोगों को कुछ प्रतिज्ञाएं दी गई हैं। पुरानी वाचा का परमेश्वर वही परमेश्वर है, जो नई वाचा का है। वाचाएं बदल गई हैं, परंतु वाचा का परमेश्वर, अपने लोगों को आशीष देने वाला उसका हृदय और उसकी सामर्थ्य नहीं बदली है। अत: बिना किसी संदेह के, हम परमेश्वर से अपेक्षा कर सकते हैं कि वह हमारे हाथ के सभी कामों पर आशीष देगा। परमेश्वर से अपेक्षा करें कि वह आपके काम में आपको आशीष दे। प्रतिदिन जब आप अपने काम के

स्थान पर जाते हैं, तो अपेक्षा करें कि प्रभु की आशीष आप पर होगी!

तरक्की प्रभु की ओर से आती है

व्यवस्थाविवरण 28:13
और यहोवा तुझ को पूँछ नहीं, किन्तु सिर ही ठहराएगा, और तू नीचे नहीं, परन्तु ऊपर ही रहेगा; यदि परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ, तू उनके मानने में मन लगाकर चौकसी करे;

भजन संहिता 75:6,7
6क्योंकि बढ़ती न तो पूर्व से न पश्चिम से,
और न जंगल की ओर से आती है;
7परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है,
वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है।

परमेश्वर आपकी ओर से है। वही परमेश्वर है, जो आपकी तरक्की के लिए जगह तैयार करता है। परमेश्वर काम के स्थान पर आपकी मेहनत और लगन को देखता है और वह आपकी तरक्की के लिए जगह बनाएगा। आपको "किसी को धक्का देकर आगे बढ़ने की", "अपने साथियों को नीचा दिखाने की", या अपने नियोक्ताओं को "रिश्वत देने की" जरूरत नहीं है। परिश्रम और लगन के साथ काम करें, अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दें और परमेश्वर आपकी तरक्की के लिए मार्ग बनाएगा। मुझे याद है कि जब मैं शिकागो में सॉफ्टवेयर कंपनी के लिए काम करता था, तब मैं बहुत हताश हो गया। मैं प्रार्थना करता था, "परमेश्वर, मुझे तरक्की दीजिए क्योंकि मुझे नहीं लगता कि मैं अपनी पूर्ण क्षमता लगाकर काम कर रहा हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि मैं और जिम्मेदारी उठा सकता हूँ और लोगों की टीम की अगुवाई कर सकता हूँ।" परमेश्वर के वचन के अनुसार, मैं विश्वास करता था कि तरक्की प्रभु की ओर से आती है। जल्द ही मेरी परिस्थितियां बदलने लगी और मेरे प्रबंधक ने मुझे लोगों की एक टीम का प्रभारी बनाया। तरक्की प्रभु की ओर से आई!

अपने हाथों के परिश्रम का फल

सभोपदेशक 3:13
और यह भी परमेश्वर का दान है कि मनुष्य खाए–पीए और अपने सब परिश्रम में सुखी रहे।

भजन संहिता 128:1,2
[1]क्या ही धन्य है हर एक जो
यहोवा का भय मानता है,
और उसके मार्गों पर चलता है!
[2]तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा;
तू धन्य होगा, और तेरा भला ही होगा।

सभोपदेशक 5:18,19
[18]सुन, जो भली बात मैं ने देखी है, वरन् जो उचित है, वह यह कि मनुष्य खाए और पीए और अपने परिश्रम से जो वह धरती पर करता है, अपनी सारी आयु भर जो परमेश्वर ने उसे दी है, सुखी रहे; क्योंकि उसका भाग यही है।
[19]वरन् हर एक मनुष्य जिसे परमेश्वर ने धन सम्पत्ति दी हो, और उनसे आनन्द भोगने और उसमें से अपना भाग लेने और परिश्रम करते हुए आनन्द करने की शक्ति भी दी हो: यह परमेश्वर का वरदान है।

अपने परिश्रम में आनंद मनाने की योग्यता–आपके काम के फल का आनंद लेने की सामर्थ्य–परमेश्वर की ओर से आशीष और वरदान है। परमेश्वर पर भरोसा रखें कि आप सचमुच आपके परिश्रम के फल का आनंद उठाएंगे। बहुत से लोग कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन अपने परिश्रम से जो कुछ वे प्राप्त करते हैं, वह मानो हवा में उड़ जाता है। ऐसा लगता है कि उनकी आमदनी या वेतन छेदवाली थैली में डाली जा रही है। अन्य लोगों के पास ढेर सारा पैसा होता है, परंतु आनंद और शांति नहीं होती। भरपूर पैसा होने के बावजूद, असंतोष, लड़ाई झगड़े होते हैं। लेकिन आपके साथ ऐसा होना आवश्यक नहीं है। परमेश्वर पर भरोसा रखें कि आप आपके परिश्रम के फल को खा सकें और उसका आनंद उठा सकें।

7
नई दुनिया में काम

यशायाह 65:17-25

17"क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूँ; और पहली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएँगी।
18इसलिये जो मैं उत्पन्न करने पर हूँ, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊँगा।
19मैं आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूँगा; उसमें फिर रोने या चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा।
20उसमें फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा, और न ऐसा बूढ़ा जाता रहेगा जिसने अपनी आयु पूरी न की हो; क्योंकि जो लड़कपन में मरनेवाला है वह सौ वर्ष का होकर मरेगा, परन्तु पापी सौ वर्ष का होकर श्रापित ठहरेगा।
21वे घर बनाकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियाँ लगाकर उनका फल खाएँगे।
22ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएँ और दूसरा बसे; या वे लगाएँ, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएँगे।
23उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न उनके बालक घबराहट के लिये उत्पन्न होंगे; क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश ठहरेंगे, और उनके बाल–बच्चे उन से अलग न होंगे।
24उनके पुकारने से पहले ही मैं उनको उत्तर दूँगा, और उनके माँगते ही मैं उनकी सुन लूँगा।
25भेड़िया और मेम्ना एक संग चरा करेंगे, और सिंह बैल के समान भूसा खाएगा; और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दुःख देगा और न कोई किसी की हानि करेगा, यहोवा का यही वचन है।"

दानिय्येल 7:13,14,18,22,27

13मैं ने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान–सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा, और उसको वे उसके समीप लाए।

[14]तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश–देश और जाति–जाति के लोग और भिन्न–भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।
[18]परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएँगे, और युगानयुग उसके अधिकारी बने रहेंगे।
[22]जब तक वह अति प्राचीन न आया, और परमप्रधान के पवित्र लोग न्यायी न ठहरे, और उन पवित्र लोगों के राज्याधिकारी होने का समय न आ पहुँचा।
[27]तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात् उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करनेवाले उसके अधीन होंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे।'

प्रकाशितवाक्य 2:25-27
[25]पर हाँ, जो तुम्हारे पास है उस को मेरे आने तक थामे रहो।
[26]जो जय पाए और मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति जाति के लोगों पर अधिकार दूँगा,
[27]और वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के मिट्टी के बर्तन चकनाचूर हो जाते हैं: मैं ने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता से पाया है;

स्वर्ग और अनंत काल कैसा होगा इस विषय में हममें से कई लोगों के पास भिन्न कल्पनाये हैं। हममें से कुछ लोग सोचते हैं कि अनंत काल हमेशा के अवकाश का समय होगा जहाँ पर हमें केवल बादलों पर बैठकर सैर करने मिलेगा और हम अपने स्वर्गीय महलों में आते-जाते रहेंगे और स्वर्गदूतों के साथ परमेश्वर की स्तुति के गीत गाएंगे। परंतु बाइबल हमें आने वाले संसार में क्या अपेक्षा करनी चाहिए, इसके विषय में कुछ बातें प्रकट करती है। यशायाह की पुस्तक का अंश हमें यह दिखाता है कि नए आकाश और नई पृथ्वी के स्थापित हो जाने के बाद भी लोग घर बनाएंगे और दाख की बारियां लगाएंगे। हम परिश्रम करेंगे और अपने हाथों से काम करने का आनंद मनाएंगे। अर्थात्, हम नई दुनिया में भी "काम" करेंगे।

दानिय्येल और प्रकाशित वाक्य की पुस्तक से लिए गए अनुच्छेद

हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर के लोग पृथ्वी पर मसीह के राज्य और प्रभुता के शासन के संचालन में सहायता करेंगे। मसीह जब आएगा और अपने राज्य को स्थापित करेगा, तब परमेश्वर के लोग मसीह के राज्य के प्रशासन में सक्रिय रूप से कार्य करेंगे। अतः ऐसा लगता है कि हम सदा काम करते रहेंगे! हम काम का आनंद लें। यह परमेश्वर द्वारा रची और ठहराई गई गतिविधि है। आपका काम पृथ्वी पर उसके उद्देश्यों को आगे बढ़ाने का एक माध्यम बने।

ऑनलाइन हमसे जुड़ें
(JOIN US ONLINE)

अंग्रेजी
(ENGLISH)

https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
https://instagram.com/allpeopleschurchbangalore
https://facebook.com/apcwo

https://youtube.com/apcbiblecollege
https://instagram.com/apcbiblecollege

https://youtube.com/APCMusicindia

https://www.youtube.com/@apc-free-christian-books

https://youtube.com/@chrysalislifecounseling

https://instagram.com/ChrysalisLifeCounseling

हिंदी
(HINDI)

https://youtube.com/APCHindi
https://www.instagram.com/apc_bangalore_hindi

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

2000 साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सब ने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

***परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"* (रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मरा। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग में चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

***"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी"* (प्रेरितों के काम 10:43)।**

***"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा "* (रोमियों 10:9)|**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड

चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मर कर और फिर मरे हुओं में से जी उठ कर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं अपने पापों की क्षमा और अपने पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के बारे में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार फैलाने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और पवित्र आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Interpreting Scripture
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses—Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The End Times
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

- **किशोरों**
- **व्यक्तिगत समायोजन**
- **सम्बंधपरक चुनौतियां**
- **शिक्षा में कम सफलता पाने वाले**
- **कार्य सम्बंधित मुद्दे**
- **परिवार / दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक आत्मिक समस्याएं**
- **माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी**
- **व्यवहार सम्बंधी विकार**
- **व्यक्तित्व विकार**
- **मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
- **तनाव / आघात**
- **शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
- **आध्यात्मिक मुद्दे**
- **जिंदगी की सीख**

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में बिना मूल्य के वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और पवित्र आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग करके आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

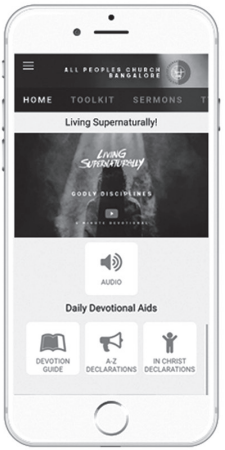
धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

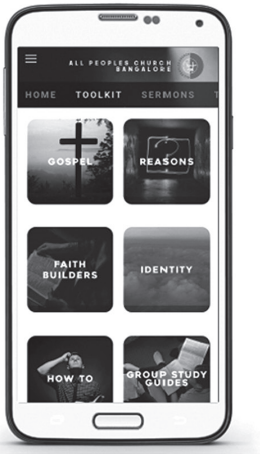
DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play





A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

निःशुल्क ऐप डाउनलोड करें:

ऐप स्टोर या प्ले स्टोर में खोजें
“ऑल पीपुल्स चर्च (APCWO)”/
All Peoples Church Hindi

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google Play



विश्वास को मजबूत करने और सुसमाचार साझा करने के लिए विभिन्न विषयों पर आधारित वचनों के टूलकिट।
उपदेशों, टीवी कार्यक्रमों, पुस्तकों, संगीत और बहुत कुछ से भरे संसाधन।
अगर आपको यह पसंद आए, तो
दूसरों को भी इसके बारे में बताएं!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

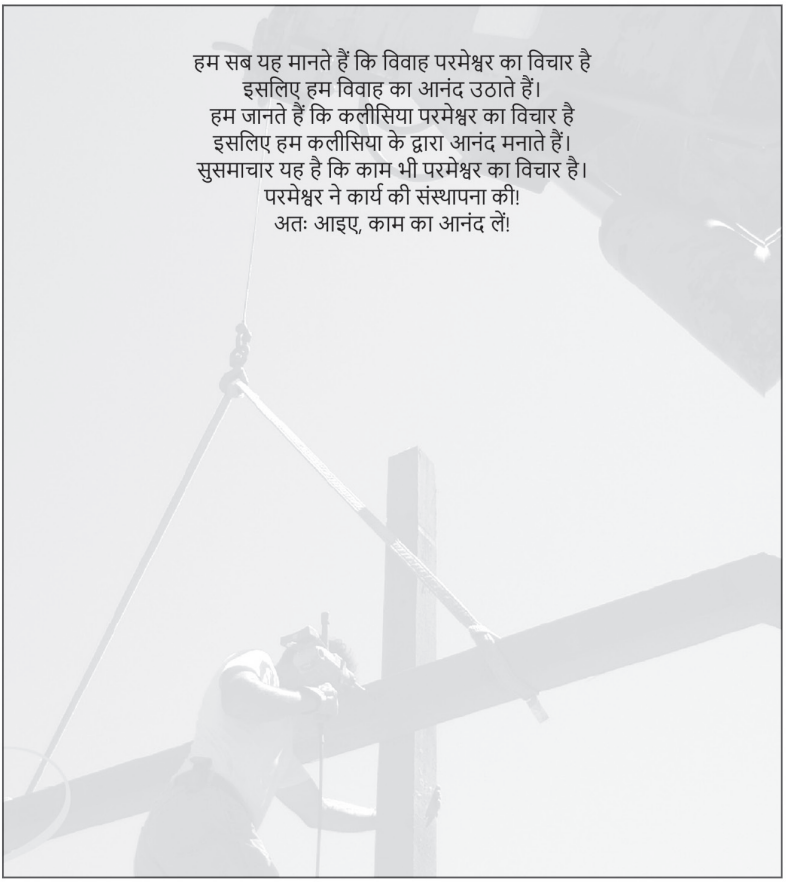
निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**



All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org